हिन्दी

(www.tiwariacademy.com)

(वसंत)(पाठ 11)(प्रदीप तिवारी – जब सिनेमा ने बोलना सीखा)

(कक्षा 8)

प्रश्न अभ्यास

पाठ से

प्रश्न 1:
जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन–से वाक्य छापे गए? उस फिल्म में कितने चेहरे थे? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 1:
'वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत–प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।'

प्रश्न 2:
पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से लिया? विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर 2:
अर्देशिर एम.ईरानी ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी और उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक को आधार बनाकर उन्होंने अपनी फिल्म की पटकथा बनाई। इस नाटक के कई गाने ज्यों के त्यों इस फिल्म में ले लिए गए।

प्रश्न 3:
विठ्ठल का चयन आलम आरा फिल्म के नायक के रूप हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया? विठ्ठल ने पुनः नायक होने के लिए क्या किया? विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर 3:
विठ्ठल उस दौर के सर्वाधिक पारिश्रमिक पाने वाले स्टार थे। उनके चयन को लेकर भी एक किस्सा काफी चर्चित है। विठ्ठल को उर्दू बोलने में मुश्किलें आती थीं। पहले उनका बतौर नायक चयन किया गया मगर इसी कमी के कारण उन्हें हटाकर उनकी जगह मेहबूब को नायक बना दिया गया। इससे विठ्ठल नाराज हो गए और अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया।

प्रश्न 4:
पहली सवाक् फिल्म के निर्माता–निदेशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओं ने उनके लिए क्या कहा था? अर्देशिर ने क्या कहा? और इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है? लिखिए।

उत्तर 4:
जब 1956 में 'आलम आरा' के प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर उन्हें सम्मानित किया गया और उन्हें 'भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था, मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।

पाठ से आगे

प्रश्न 1:
मूक सिनेमा में संवाद नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है। पर, जब सिनेमा बोलने लगा, उसमें अनेक परिवर्तन हुए। उन परिवर्तनों को अभिनेता, दर्शक और कुछ तकनीकी दृष्टि से पाठ का आधार लेकर खोजें, साथ ही अपनी कल्पना का भी सहयोग लें।

उत्तर 1:
छात्र अपनी कल्पना और अध्यापक के सहयोग से इसे कार्य को पूर्ण करेंगे।

प्रश्न 2:
डब फिल्में किसे कहते हैं? कभी–कभी डब फिल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है। इसका कारण क्या हो सकता है?

उत्तर 2:
दूसरी भाषा में बनी फिल्मों को किसी अन्य भाषा में बनाना फिल्म का डब करना कहा जाता है इसमें भाषा की प्रस्तुति में अंतर के कारण मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है।

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1:
किसी मूक सिनेमा में बिना आवाज़ के ठहाकेदार हँसी कैसी दिखेगी? अभिनय करके अनुभव कीजिए।

उत्तर 1:
छात्र अपनी प्रतिभा का परिचय अपने अभिनय के द्वारा देंगे।

प्रश्न 2:
मूक फिल्म देखने का एक उपाय यह है कि आप टेलीविजन की आवाज़ बंद करके फिल्म देखें। उसकी कहानी को समझने का प्रयास करें और अनुमान लगाएँ कि फिल्म में संवाद और दृश्य की हिस्सेदारी कितनी है?

उत्तर 2:
इस कार्य को छात्र अपने घर पर स्वयं करेंगे और अगले दिन कक्षा में मित्रों से वार्तालाप कर अपने अनुभव साझा करेंगे।